कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



विजय, बीमारी और व्यापार :–

- 16वीं सदी में जब यूरोपीय जहाज़ियों ने एशिया तक का समुद्री रास्ता ढूँढ़ लिया उसके बाद पश्चिमी सागर को पार करते हुए अमेरिका तक जा पहुँचे गये थे।
- अब पूर्व–आधुनिक विश्व बहुत छोटा सा दिखाई देने लगा।
- इससे पहले कई सदियों से हिंद महासागर के पानी में व्यापार फल फूल रहा था।
- इसमें विभिन्न तरह के सामान, लोग, ज्ञान और परंपराएँ एक जगह से दूसरी जगह आ–जा रही थीं।
- भारतीय उपमहाद्वीप इन प्रवाहों के रास्ते में एक अहम बिंदु था। पूरे नेटवर्क में इस इलाक़े का भारी महत्त्व था।
- यूरोपीयों के दाखिले से यह आवाजाही और बढ़ने लगी और अब प्रवाहों की दिशा यूरोप की तरफ भी मुड़ गयी।

अमेरिका की खोज :–

- अपनी खोज से पहले लाखों साल से अमेरिका का दुनिया से कोई संपर्क नहीं था।
- 1492 में क्रिस्टोफर–कोलबंस ने इसकी खोज की।

व्यापार :–

- 16वीं सदी से अमेरिका की विशाल भूमि और बेहिसाब फसलें व खनिज पदार्थ हर दिशा में जीवन का रूप–रंग बदलने लगे।
- आज के पेरू और मैक्सिको में मौजूद खानों से निकलने वाली कीमती धातुओं जैसे खासतौर से चाँदी ने भी यूरोप की संपदा को बढ़ाया।
- इससे पश्चिम एशिया के साथ यूरोप के व्यापार को गति मिली।
- 17वीं सदी के आते–आते पूरे यूरोप में दक्षिणी अमेरिका की धन–संपदा के बारे में तरह–तरह के किस्से बनने लगे थे।
- इन्हीं किंवदंतियों की बदौलत वहाँ के लोग एल डोराडो को सोने का शहर मानने लगे और उसकी खोज में बहुत सारे खोजी अभियान शुरू किए गए।

विजय :–

- 16वीं सदी के मध्य तक आते–आते पुर्तगाली और स्पेनिश सेनाओं की विजय का सिलसिला शुरू हो

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

चुका था।

- उन्होंने अमेरिका को उपनिवेश बनाना शुरू कर दिया था।
- यूरोपीय सेनाएँ केवल अपनी सैनिक ताकत के दम पर नहीं जीतती थीं।
- स्पेन के विजेताओं के पास परंपरागत किस्म का कोई भी सैनिक हथियार नहीं था।
- उनके पास तो चेचक जैसे कीटाणु रूपी हथियार था जो स्पेनिश सैनिकों और अफसरों के साथ वहाँ जा पहुँचा था।
- लाखों साल से दुनिया से अलग-थलग रहने के कारण अमेरिका के लोगों के शरीर में यूरोप से आने वाली इन बीमारियों से बचने की रोग-प्रतिरोधी क्षमता नहीं थी।
- फलस्वरूप इस नए स्थान पर चेचक बहुत मारक साबित हुई।
- एक बार संक्रमण शुरू होने के बाद तो यह बीमारी पूरे महाद्वीप में फैल गई।
- जहाँ यूरोपीय लोग नहीं पहुँचे थे वहाँ के लोग भी इसकी चपेट में आने लगे।
- इसने पूरे के पूरे समुदायों को खत्म कर दिया।
- इस प्रकार से यूरोपीय घुसपैठियों की जीत का रास्ता आसान होता चला गया।
- बंदूकों को तो खरीद कर या छीन कर हमलावरों के खिलाफ भी इस्तेमाल किया जा सकता था। पर चेचक जैसी बीमारियों के मामले में तो ऐसा नहीं किया जा सकता था।
- यद्यपि यूरोपीय हमलावरों के पास तो चेचक से बचाव का तरीका भी था तथा साथ ही उनके शरीर में रोग प्रतिरोधी क्षमता भी विकसित हो चुकी थी।

"जैविक युद्ध"

न्यू इंग्लैंड स्थित मैसाचुसेट्स कॉलोनी के पहले गवर्नर जॉन विनथॉर्प ने मई 1634 में लिखा था कि 'छोटी चेचक उपनिवेशकारों के लिए ईश्वर का वरदान है ।
देशी जनता ... छोटी चेचक के कारण लगभग पूरी खत्म हो चुकी थी। इस तरह परमेश्वर ने हमारी मिल्कीयत पर हमें मालिकाना हक दे ही दिया।'

- 19वीं सदी तक यूरोप में गरीबी और भूख का ही साम्राज्य था।
- शहरों में बेहिसाब भीड़ थी और बीमारियों का बोलबाला था।
- धार्मिक टकराव होते रहना एक आम बात हो गयी थी।
- धार्मिक असंतुष्टों को कड़ा दंड दिया जाता था।
- इन सब कारणों से यूरोप से हजारों लोग भागकर अमेरिका जाने लगे।
- 18वीं सदी तक यूरोपीय लोग अफ्रीका से गुलामों को पकड़ कर अमेरिका लाते थे फिर उनको काम में झोंक कर यूरोपीय बाज़ारों के लिए कपास और चीनी का उत्पादन करवाते थे।
- 18वीं सदी का काफी समय बीत जाने के बाद भी चीन और भारत को दुनिया के सबसे धनी देशों में गिना जाता था।

गुलामों की खरीद-फरोख्त : न्यू ऑर्लियंस, (इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़, 1851)

- एक खरीदार नीलामी के लिए कतार में खड़े गुलामों को गौर से देख रहा है।
- इस चित्र में 4 औरतों और लंबी टोपियाँ पहने 7 पुरुषों के साथ 2 बच्चे भी बिकने के लिए खड़े हैं।

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here



- अच्छी कीमत पाने के लिए गुलामों को अकसर बढ़िया कपड़े पहना कर बाज़ार में लाया जाता था।
- एशियाई व्यापार में भी चीन और भारत का दबदबा था।
- लेकिन 15वीं सदी के बाद से चीन ने दूसरे देशों से अपने संबंध कम करना शुरू कर दिए और वह दुनिया से अलग-थलग पड़ने लगा।
- चीन की घटती भूमिका और अमेरिका के बढ़ते महत्त्व के चलते विश्व व्यापार का केंद्र पश्चिम की ओर खिसकने लगा।
- अब यूरोप ही विश्व व्यापार का सबसे बड़ा केंद्र बन गया।

उन्नीसवीं शताब्दी (1815-1914) में प्रवाह

- 19वीं सदी में दुनिया तेजी से बदलने लगी।
- आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी कारकों ने पूरे के पूरे समाजों की कायापलट कर दी।
- इसने विदेशी संबंधों को भी नये ढर्रे में डाल दिया।
- अर्थशास्त्रियों ने अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक विनिमय में 3 तरह के गतियों या प्रवाहों का उल्लेख किया है। ये प्रवाह हैं :-

1. व्यापार 2. श्रम 3. पूँजी

1. व्यापार :- पहला प्रवाह व्यापार का होता है। जो 19वीं सदी में मुख्य रूप से वस्तुओं (जैसे - कपड़ा या गेहूँ आदि) के व्यापार तक ही सीमित था।
2. श्रम :- दूसरा प्रवाह श्रम का है। जिसमें लोग काम या रोजगार की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं।
3. पूँजी :- तीसरा प्रवाह पूँजी का होता है। जिसे अल्प या दीर्घ अवधि के लिए दूर-दराज के इलाकों में निवेश कर दिया जाता है।

- ये तीनों तरह के प्रवाह एक दूसरे से जुड़े हुए थे तथा लोगों के जीवन को प्रभावित करते थे।
- कभी-कभी इन कारकों के बीच मौजूद सम्बन्ध टूट भी जाते थे। जैसे - वस्तुओं या पूंजी की आवाजाही के मुकाबले श्रमिकों की आवाजाही पर प्रायः ज्यादा शर्तें और बंदिशें लगाई जाती थीं।
- फिर भी यदि हम इन तीनों प्रवाहों का एक साथ अध्ययन करें तो 19वीं सदी की विश्व अर्थव्यवस्था को ज्यादा अच्छी तरह से समझ सकते हैं।

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here